

Written by यशवंत

Thursday, 13 October 2011 18:06

आजकल जनि मीडिया घरानों के पास कथति रूप से पत्रकरता क ठेक है, वे पत्रकरों के पत्रकर नहीं बल्कि दलाल बनाने में लगे हुए हैं। वे अपने संपादकों के संपादककम, लायजनगि अधकिकरी ज्यादा बनाकर रखते हैं। ताजा मामला हदुस्तान टाइम्स जैसे बड़े मीडिया हाउस क है। बड़िला जी केइस मीडिया घराने के मालकनि शोभना भरतिया है। उनकेहदि अखबार केप्रधान संपादकशशि शेखर है।

पछिले दनिों शशि केकंधे पर शोभना भरतिया ने □ कबड़ा टासकरख दया। जब मालकनि ने कोई कम कह दया तो भला संपादककैसे ना-नुकूर करे। शोभना क आदेश मलिते ही हवा के वेग से शशि शेखर देहरादून पहुंच ग। अब जान लें क मालकनि ने कम क्या सौपा। दरअसल नशिकजब उत्तराखंड के मुख्यमंतरी हुआ करते थे तो उन्होंने मौखिकरूप से यह ऐलान कर दया था क राज्य में □ चटी गुरुप के डीमड यूनविरसटि खोलने क मौक प्रदान कया जा ग। संभवत □ नशिकके कैब्रनिट ने इसे पारति भी कर दया था और अब इसे वधानसभा में पास होना था। नशिकसे हदुस्तान, देहरादून केस्थानीय संपादकदनैश पाठकक गहरा याराना था। दनैश पाठकके उन दनिों सी □ म नशिककेदा □-बा □ मंडराते हुए अक्सर देखा जा सकता था। नशिकसे प्रेम क फयदा दनैश पाठकने हदुस्तान अखबार के नाना रूपों में दलिवाया जसिमें □ करूप ववि खोलने के अनुमति देना भी था। और, नशिकप्रेम से अत्यधिक प्रेम के चक्कर में दनैश पाठकने खंडूरी से भी पंगा ले लिया था, उन दनिों खंडूरी के खलिफखूब खबरें छापीं।

खंडूरी ने सी □ म के कुर्सी संभालते ही नशिकके भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने के पहल करते हुए उनकेफैसलों के समीक्षा क ऐलान कर दया। □ चटी वालों के डीमड यूनविरसटि खोलने के अनुमति देने केकैब्रनिट केप्रस्ताव क अध्ययन करने केला □ क आई □ स अधकिकरी केनेतृत्व में कमेटी बना दी। बात दलिली तक, शोभना भरतिया तकपहुंच गई क उत्तराखंड में □ चटी केप्रस्तावति वशिवदियालय पर खंडूरी सरकार पानी फेर सकती है। इसकेबाद शोभना भरतिया ने अपने सीईओ राजीव वर्मा और संपादकशशि शेखर के "आपरेशन खंडूरी" में लगा दया। कई दनिों तकराजीव वर्मा और शशि शेखर देहरादून में पड़े रहे। इनके दो बार मीटगि भी खंडूरी केसाथ हुई पर खंडूरी टस से मस नहीं हुए। उन्होंने कहा क वे वही करेंगे जो राज्य केहति में होगा और नीतयिों के अनुरूप होगा। उन्होंने अलग से कोई छूट या अनुशंसा करने से मना कर दया। इसकेबाद राजीव वर्मा और शशि शेखर टक सा मुंह लेकर लौट ग।

सूत्रों क कहना है क जसि कमेटी के ववि केप्रस्ताव पर रपिर्ट सौपने के कहा गया, उसने इतनी कमथिां प्रस्ताव में पाई हैं क इसक नीतिकेतहत पास होना संभव ही नहीं है। पर शशि शेखर जुटे रहे क वह कसी तरह से खंडूरी के मना कर कम करा लेंगे पर ऐसा हो न सक। इस पूरे घटनाक्रम के दौरान दनैश पाठकबलिकुल हाशा □ पर चले ग। सूत्रों क कहना है क शशि शेखर के मीटगि तकदनैश पाठकनहीं रखवा पा। क्योंक उनक खंडूरी व उनके लोगों से छत्तीस क आंकड़ा रहा है। इस कारण नशिककेकर्यकल के दौरान हदुस्तान, देहरादून में हाशा □ पर रखे ग। अवक्लि थपलयाल के सामने लाया गया। अवक्लि ने अपने सूत्र पर पहल कर खंडूरी से शशि शेखर के मीटगि फक्स कराई। इससे दनैश पाठकके लायजनगि केमामले में नंबर कम हो ग। वैसे दनैश पाठकसी □ म बदलने केबाद से खंडूरी के जय जय करने में भी खूब लगे हैं और सरकार परस्त खबरों के छाप छाप कर ज्यादा से ज्यादा तेल-मक्खन लगाकर खूब नंबर बटोरने के फेरिकमें लगे हैं पर उनकी दाल गल नहीं पा रही।

अवक्लि के आगे आने और "आपरेशन खंडूरी" के कई स्टेप्स संभालने से दनैश पाठकके कुर्सी पर खतरा मंडरा गया है। □ चटी प्रबंधन के समझ में आ गया है क जब तकदनैश पाठकदेहरादून में हदुस्तान के कुर्सी पर आसीन रहेंगे, खंडूरी क गुस्सा शांत नहीं होने वाला। इस तरह न □ संपादकके तलाश शुरु हो गई है पर कोई 'सूटेबल ब्वाय' अभी नहीं मलिा है। शशि शेखर और राजीव वर्मा के खंडूरी से मीटगि और टक सा मुंह लेकर वापस लौटने के घटना के देहरादून केवरषिठ पत्रकरों के बीच खूब चरचा है। जतिने मुंह उतनी बातें सुनाई पड़ रही हैं। बीसी खंडूरी के कुछ क्रीबी लोगों से जब भड़ास4मीडिया ने बात की तो उन्होंने शशि शेखर और राजीव वर्मा के देहरादून आने व खंडूरी से मलिने के पुष्टि के और साथ ही यह भी जानकरी दी क ये लोग वशिवदियालय केमसले पर ही मलिने आ □ थे।

Written by यशवंत
Thursday, 13 October 2011 18:06

उधर, क चर्चा और भी है. लोग कह रहे हैं कि उमाकंत लखेड़ा ने शशांशेखर से अच्छा बदला लिया. उमाकंत लखेड़ा दिल्ली में हदुस्तान के ब्यूरो चीफ थे और शशांशेखर के कारण उन्हें हदुस्तान छोड़ना पड़ा था. अब लखेड़ा सीएम म खंडूरी के मीडिया डेवाइजर हैं. उन्होंने अपने लेवल पर भी भरसक यह केशशि की होगी कि शशांशेखर के कम किसी भी हालत में सीएम के लेवल से पास न हो जायें ताकि शशांशेखर के हसास हो सके कि मीडिया की दुनिया वाकई छोटी है और कोई छोटे पद वाला जर्नलिस्ट भी उनके सामने शेर जैसी ताकत वाला बन सकता है. शह-मात के इस खेल में फलिहाल बुरी स्थिति शशांशेखर की है. कई लोग यह भी कह रहे हैं कि खंडूरी को न पटा पाना शशांशेखर के करियर के लिए भारी पड़ सकता है. शोभना भरतिया कई मसलों के कारण शशांशेखर से नाराज चल रही हैं और अब वे नए दौर के लहाज से नए संपादक की तलाश में हैं जिसके तहत उनकी कई लोगों से मुलाकत व बातचीत भी शुरू हो गई है. तो लोग यह मानने लगे हैं कि छह महीने या साल भर में शशांशेखर के राज का खात्मा संभव है. फलिहाल शशांशेखर के लिए देहरादून की हार का बड़ी हार है जिसका घाव भरते भरते वक्त लगेगा.

पर ऐसे वक्त में शशांशेखर के कौन समझें कि उन्होंने जिस तरह की अवसरवादी पत्रकारिता अबतक के अपने करियर में की है, उसका अंजाम कुछ इसी तरह का होना था. प्रधान संपादक की कुर्सी पर बैठ जाने और पीएम के साथ कई देश घूम आने से लोग महान बन जाते या बड़े पत्रकार कहलाते तो इस देश में ऐसे कृत्य करने वाले हजारों पत्रकार हो चुके हैं पर उनका कोई नामलेवा नहीं है. हां, ये जरूर है कि उन्होंने इतना पैसा कमा लिया और दिल्ली में घर-दुकान बना लिया कि उनकी कई पीढ़ियां आराम से उनके जाने के बाद भी जी-खा सकती हैं. पर यह कम तो लाला लोग भी करते हैं, करिना वाला भी करता है, फरि उनमें और पत्रकार में फरक क्या. दरअसल दक्खिन ये है कि आजकल के बाजारू दौर में पत्रकारिता के असली मतलब के पत्रकार लोग भूल गए हैं. कोई संपादक भी नहीं जानना चाहता कि संपादक होने के असली मतलब क्या होता है. वह तो मालकि और मालकीनों का मुंह देखता रहता है कि वे क्या कहें और हम तुरंत उसके अनुपालन में लग जायें. कजमाने में जो कम टाइपिस्टों, पीएम, चाक्यों आदि का होता था, वह अब प्रधान संपादकों का हो गया है.

इसी कारण आजकल के संपादक दोहरे व्यक्तित्व के लेकर जी रहे हैं. आफिस में दलाली और समझौते की बातें करते हैं और मंचों पर, पन्नों पर नैतिकता व सरोकर की. इसी के चलते संपादकों के खाने और दखिने के दांत अलग-अलग होते हैं. इस बात के जानते तो सब हैं और इसके प्रामाणिक उदाहरण भी आने दिन मलि जाते हैं. इस खाने-दखिने वाले दांतों के अलग-अलग होने के नए जमाने के संपादक लोग गर्व से मल्टीटास्किंग वाला प्रोफेशनल टटीट्यूड कहकर स्वीकरते-बताते हैं और यह सब कहते हुए उन्हें लाज-शरम भी नहीं आती.

पर इन्हें कौन फरि से पढ़ा कि संपादक और पत्रकार होने का मतलब आधा बागी होना होता है, होलटाइमर सरीखे जीवन को जीना होता है, मशिनरी प्रोज से जनहति में लखिना-लड़ना होता है. जो सत्ता और सिस्टम के द्वारा हाशिया पर फेंके गए लोग हैं, जिनका कोई सुनने वाला नहीं है, जिनकी आवाज के दमदारी से उठाने वाला कोई नहीं, वैसे वंचितों-दलितों-दरदियों का नेता बनने, अगुवा होने, आवाज उठाने, लड़ने का काम होता है पत्रकारों का. शासन और सत्ता के कर्पशन, करोबार, जनहति वरिधी कर्यों का खुलासा करते हुए दो-दो हाथ करना होता है पत्रकारों का काम.

इस प्रक्रिया में जतिने संकट आये, मुश्किल आये, उससे निपटना होता है पत्रकार का काम क्योंकि ईमानदारी व सरोकर को जीने वाले संघर्षों और मुश्किलों के संग-संग ही जीवन को जी पाते हैं और इसी में संतुष्टि पाते हैं. तो यह काम वही कर सकता है जो आत्मा और दिल से बागी हो. जिनके अंदर बकिने और झुकने की लेशमात्र भी लालसा, इच्छा न हो. जनिहें भौतिक सुख-सुवधियां न लुभाती हों. जो पत्रकारिता को धंधा और बजिनेस न मानते हों. तो ऐसे होते हैं असली पत्रकार लेकिन दुर्भाग्य यह कि जो पत्रकार कहे जाते हैं आजकल, वही सबसे बड़े सुवधिभोगी बनने की ओर उन्मुख हैं. जो संपादक कहे जाते हैं आजकल वही सबसे बड़े पीआर जेंट बनने की ओर उन्मुख हैं. इसी कारण हमारे दौर में राडियाओं का काम आसान हो जाता है कि क्योंकि उसके कफोन पर बड़े बड़े संपादक लायजनिंग और पीआर के अनमोल बोल बोलने बकने लगते हैं.

000000 40000000 00 000000 000000 00 00000000. 00000000 00 00000000 00 0000000000 00 000000 00 00000000 0000 0000 0000 00 000000 000000 00 bhad4media@gmail.com 00 0000000000 00 00000 000.